INTERNATIONAL JOURNAL OF VERSATILE RESEARCH AND ANALYSIS (IJVRA)
© 2025 IJVRA | Volume 3, Issue 9, September 2025 | ISSN: 2984-8903 | IJVRA.ORG

भारत–चीन युद्ध 1962 और उत्तराखण्ड की भोटिया जनजातिः विघटन, प्रभाव और पुनर्निर्माण

डॉ0 गीता आर्या एवं चन्दन सिंह जीना

असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि व्याख्याता) इतिहास विभाग

लक्ष्मण सिंह महर परिसर, पिथौरागढ़

साराशं

1962 का भारत–चीन युद्ध भारत के इतिहास में केवल एक सैन्य संघर्ष नहीं था, बल्कि इसने सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों के जीवन को गहराई से प्रभावित किया। उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति, जो सदियों से भारत–तिब्बत सीमा पर व्यापार, पशुपालन और मौसमी प्रवास पर आधारित जीवन जीती आ रही थी, इस युद्ध के बाद सबसे अधिक प्रभावित जनजातियों में से एक रही। युद्ध से पूर्व भोटिया समाज आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर था और भारत तथा तिब्बत के बीच व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सेतु की भूमिका निभाता था।

भारत–चीन युद्ध के बाद सीमा को बंद कर दिए जाने से भोटिया जनजाति की पारम्परिक अर्थव्यवस्था पूरी तरह टूट गई। सीमावर्ती व्यापार का समापन होना, पशुपालन में गिरावट और आजीविका के साधनों का अभाव उनके लिए गंभीर संकट बन गया। बड़ी संख्या में लोगो को अपने पैतृक गांव छोड़कर निचले क्षेत्रों में बसना पड़ा, जिससे सामाजिक संरचना और सामुदायिक जीवन कमजोर हुआ। इसके साथ ही सेना की बढ़ती उपस्थिति और प्रशासनिक नियंत्रणों ने उनकी पारम्परिक जीवन शैली में गहरा हस्तक्षेप किया। तिब्बत से संपर्क टूटने के कारण भोटिया समाज की भाषा, रीति–रिवाज और सांस्कृतिक परम्पराओं पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा। युद्धोत्तर काल में सरकार द्वारा पुनर्वास और सीमांत विकास से जुड़ी योजनाएं लागू की गई, परन्तु ये प्रयास समुदाय की सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सके। समय के साथ भोटिया जनजाति ने कृषि, बागवानी, पर्यटन, हस्तशिल्प और सरकारी सेवाओं को वैकल्पिक आजीविका के रूप में अपनाया। शिक्षा के प्रसार से नई पीढ़ी को नए अवसर मिले, किंतु पारम्परिक पहचान और सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखना एक चुनौती बन गया है।

भारत चीन युद्ध 1962 न केवल दो देशों के बीच सीमाओं का संघर्ष था बल्कि यह सीमांत क्षेत्रों में निवास करने वाले जनसमुदायों के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाली एक ऐतिहासिक घटना भी थी। उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति, जो तिब्बत से लगने वाले सीमावर्ती क्षेत्रों जैसे– मुन्स्यारी, जौहार, दारमा, व्यास, नीति–माणा घाटियों में निवास करती थी इस युद्ध से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुई। इस युद्ध से **भोटिया समुदाय का विघटन** होना शुरू हो गया। युद्ध के बाद भारत–तिब्बत सीमा को बंद कर दिया गया, जिससे भोटिया जनजाति का सदियों पुराना व्यपारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध तिब्बत से टूट गया। संरचना पूरी तरह से **विघटित** हो गई। साथ ही तिब्बती संस्कृति से गहरे जुड़ाव वाले सामाजिक–सांस्कृतिक सम्बन्ध भी समाप्त हो गए। इस **विघटन** ने उनके जीवनयापन, पहचान और परम्परागत आर्थिक ढॉचें को अस्थिर कर दिया।

कुंजी शब्द– भारत–चीन युद्ध 1962, भोटिया जनजाति, उत्तराखण्ड, सीमावर्ती समाज, सामाजिक विघटन, पुनर्निर्माण, विघटन

प्रस्तावना

भारत चीन युद्ध 1962 न केवल दो देशों के बीच सीमाओं का संघर्ष था बल्कि यह सीमांत क्षेत्रों में निवास करने वाले जनसमुदायों के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाली एक ऐतिहासिक घटना भी थी। उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति, जो तिब्बत से लगने वाले सीमावर्ती क्षेत्रों जैसे– मुन्स्यारी, जौहार, दारमा, व्यास, नीति–माणा घाटियों में निवास करती थी इस युद्ध से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुई। इस युद्ध से **भोटिया समुदाय का विघटन** होना शुरू हो गया। युद्ध के बाद भारत–तिब्बत सीमा को बंद कर दिया गया, जिससे भोटिया जनजाति का सदियों पुराना व्यपारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध तिब्बत से टूट गया। यह जनजाति पारम्परिक रूप से ऊनी वस्त्र, जड़ी–बूटियां और पशुपालन के व्यापार पर निर्भर थी। व्यापारिक मार्ग जैसे–माणा, नीति, लिपुलेख, दारमा, मिलम घाटियां बंद होने से उनकी आर्थिक संरचना पूरी तरह से **विघटित** हो गई। साथ ही तिब्बती संस्कृति से गहरे जुड़ाव वाले सामाजिक–सांस्कृतिक सम्बन्ध भी समाप्त हो गए। इस **विघटन** ने उनके जीवनयापन, पहचान और परम्परागत आर्थिक ढॉचें को अस्थिर कर दिया। इसका **आर्थिक प्रभाव** यह पड़ा कि आर्थिक संकट के साथ–साथ भोटिया समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन भी हुआ। पारम्परिक व्यवसाय के समाप्त होने से **पलायन** होने लगा। **बेरोजगारी** बढ़ने लगी अब ये लोग मैदानों में जाकर रहने लगे और शिक्षा, रोजगार तथा स्वास्थ्य जैसी आवश्यकताओं की ओर अब उनका झुकाव होने लगा। सांस्कृतिक प्रभाव के क्षेत्र में भाषा, वेश–भूषा, संगीत, नृत्य और धार्मिक परम्पराओं पर आधुनिक संस्कृति का प्रभाव पड़ा। कई पारम्परिक रीति–रिवाज विलुप्त होने लगे। यदि **राजनीतिक प्रभाव** की बात की जाए तो सीमांत सुरक्षा की दृष्टि से सेना की उपस्थिति और प्रशासनिक नियंत्रण ने स्थानीय जीवन पर असर डाला।

युद्ध के बाद भारत सरकार द्वारा भोटिया जनजाति को अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्रदान तो किया गया लेकिन उनके पारम्परिक ज्ञान, लोककला, पोशाक, भाषा और सांस्कृतिक पहचान पर वर्तमान समाज का प्रभाव पडना शुरू हो गया जिससे उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता धीरे–धीरे समाप्त होने लगी। **पुनर्निर्माण की प्रक्रिया** में अब भोटिया समुदाय ने बदलते सामाजिक–आर्थिक परिवेश में स्वयं को दुबारा स्थापित करने का प्रयास किया। पर्यटन, हस्तशिल्प, ऊनी वस्त्र उद्योग, जड़ी–बूटी और सरकारी योजनाओं ने उन्हें नए आर्थिक अवसर प्रदान किए। शिक्षा और आधुनिकता के प्रभाव से नई पीढ़ी ने अपनी पहचान को दुबारा से परिभाषित किया। भोटिया उत्सव, लोकनृत्य, पारम्परिक वेशभूषा और लोककला के संरक्षण के लिए विभिन्न सांस्कृतिक समितियां बनी है। आज भोटिया समाज अपने पारम्परिक मूल्यों और आधुनिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है।

भोटिया जनजातिः ऐतिहासिक दृष्टिकोण

उत्तराखण्ड के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में निवास करने वाली भोटिया जनजातियां, जो ऐतिहासिक रूप से भारत व तिब्बत के बीच वाणिज्यिक, सांस्कृतिक व सामाजिक सेतू का कार्य करती थी, इस युद्व के सबसे गहरे समुदायों में से एक रही। भोटिया समुदाय जिसमें मुख्य रूप से निम्नलिखित उप जनजातियां शामिल है–

- रं
- जौहार,
- शौका,
- तोल्छा,
- मार्छा

ये जनजातियां मुख्य रूप से उत्तराखण्ड के तीन सीमावर्ती जिलों पिथौरागढ़, चमोली व उत्तरकाशी व सात नदी–घाटियों में निवास करती है। घाटियों के अनुसार भी विभिन्न क्षेत्रों में इन्हें अलग–अलग नामों से जाना जाता है। जैसे–**पिथौरागढ़** की धारचूला तहसील में–दारमा, व्यास, व चौंदास घाटियों में निवास करने वाली भोटिया जनजाति को दारमी, व्याड़सी, चौदाड़सी कहा जाता है।

चमोली में इन्हें तोल्छा व मार्छा कहा जाता है।

मुन्स्यारी के जौहार घाटी के लोगों को जौहारी या शौका

उत्तरकाशी में जादुंग व नेलंग, बागोड़ी व डुण्डा घाटियों के भोटियाओं को जाड़ कहा जाता है। जाड़ बौद्व है तथा शौका पर हिंदू व बौद्व दोनों का ही असर दिखाई देता है।

व्यापारिक व्यवस्था

भारत चीन युद्व से पूर्व भोटिया व्यापारियों का तिब्बत से व्यापारिक सम्बन्ध सदियों से चलता रहा। ये व्यापारी हिमालय के पर्वतीय रास्तों (दर्रो) से होकर गर्मियो में अपनी भेड़—बकरियों सहित तिब्बत की मण्ड़ियों में पहुंचते थे। भेड—बकरियों को ऊन प्राप्त करने के साथ—साथ भारवाहक के रूप में भी उपयोग किया करते थे। हिमालय के पर्वतीय रास्तों से तिब्बत पहुंचने के लिए कुमाऊँ की जोहार घाटी से ऊंटाधूरा, किंगरी—बिंगरी एवं लिपूलेख मार्ग प्रमुख थे। टिहरी मार्ग से छपराड़, माणा, से थोलिंग, नीति से दापा, ऊंटाधूरा से ज्ञानिम, लिपुलेख और नेपाल सीमा से तिकर, तकलाकोट से दरचैन से तिब्बत पहुंचा जाता था। भोटिया लोग वस्तु विनिमय व्यापार में यहां से चाय—चीनी, तम्बाकू, सूती धागा, रंग उवा, जौ, फाफर आदि वस्तुओं को अपनी भेड़—बकरियों में लादकर तिब्बत की ऊंटाधूरा, लिपुलेख, दारमा आदि मण्डियों तक पहुंचते थे। वहां से हींग, फरण, चोरू व अन्य जड़ी—बूटियां लेकर उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर बेचते थे। तिब्बत से नमक को भेड़—बकरियों में लादकर टनकपुर, हल्द्वानी, कोटद्वार, रामनगर, पौड़ी आदि क्षेत्रों में पहुंचकर माल का लून कहकर जौ, मडुवा व मोटे अनाज के बदले देते थे। इस तरह वस्तु विनिमय प्रणाली के आधार पर तिब्बत से जौ, मडुवा और मोटे अनाज के बदले अन्य वस्तुएं लाकर यहां पर बेचते थे। इसके अतिरिक्त भोटिया व्यापारी पशम ऊन उद्योग का व्यापार भी करते थे। शीत प्रदेशों में रहने वाले याक, घोडों, भेड़—बकरियों के शरीर से ऊन (बाल) काटी जाती थी।

भोटिया व्यापारी तिब्बत से पशम ऊन लाकर उत्तराखण्ड में बेचते थे जिससे उन्हें अच्छी आय प्राप्त होती थी। तिब्बत व्यापार के समय तिब्बत से हुनकारा भेड़ें व बकरियां जौहार के भोटिया व्यापारी खरीदकर उन्हें मांस हेतु लैन्सडौन, रानीखेत आदि छावनियों में बेचते थे। चारागाहों में भेड़—बकरियों की अधिक संख्या होने से उनकी देखरेख के लिए हुन्निकुकुर (जिन्हें भोटिया कुकुर भी कहते थे) रखते थें ये कुत्ते बडे ही फुर्तीले व ताकतवर होते है। आज भी जब भोटिया अपनी भेड़—बकरियों को लेकर निचली गरम घाटियों में शीतकाल में चराने आते है तो उनके साथ भोटिया कुत्ते (कुकुर) भेड—बकरियों की रखवाली के लिए जंगलों एवं चारागाहों में देखे जा सकते है। तिब्बत आक्रमण से पशमीना ऊन का आयात बन्द होने से ऊन उद्योग संकट में पड गया। तब भोटिया व्यापारियों ने अपनी भेड़—बकरियों की टोलियां तैयार की और पुनः ऊन उद्योग को विकसित करके इसे गृह उद्योग के रूप में अपनाया। आज भोटिया महिलाएं अपने—अपने घरों में हथकरघे से ऊन की कुटाई, फटाई व सफाई में व्यस्त रहती है और पूरे दिन ऊन की कताई करती रहती है। इसी ऊन से घर के सदस्यों के लिए गरम कोट, पंखी, थुलमा, कमरबन्ध आदि चीजें तैयार करती है। इनके द्वारा प्राकृतिक रंगों से सजाकर कालीन बनाई जाती है जो बहुत ही आकर्षक लगती है। ये प्राकृतिक रंग पेड़ों, पत्तियों एवं जड़ों से रस को निकालकर बनाये जाते है तथा ऊन को इन रंगों से रंगकर रंग—बिरंगें ऊन वस्त्र तैयार किये जाते है। ऊन से बने थुलमा, गलीचे, ऊनी पंखियों को उचित दामों में बेचकर ये लोग मुनाफा कमाते है।

इसके अलावा भोटान्तिकों का जड़ी—बूटी व्यवसाय भी प्रमुख व्यवसाय माना जाता है जिसमें हिमालय के शिखरों में उगने वाली जड़ी—बूटियां जिनमें अतीस, कड़वी कूट, ममीरी, डोलू, टांटरी, ब्रजदन्ती, विषकण्डार, पत्थरचट्टा, किरमाड, जटामासी, टांकाझाड़, बनककड़ी, संगसरमूल, चोरा आदि जड़ी—बूटियां प्रसिद्ध है।

पशुपालन व्यवसाय भी इनका एक प्रमुख व्यवसाय था। भोटिया व्यापारियों द्वारा पाली गयी भेड़—बकरियों, घोडों एवं खच्चरों का प्रयोग भारवाहक के रूप में किया जाता था। सरकार ने भी पशुपालन व्यवसाय को प्रोत्साहन देने हेतू भेड़ पालक भोटिया बाहुल्य क्षेत्रों में भेड़ प्रजनन केन्द्र की स्थापना की है जिसमें उत्तम कोटि की भेड़ें प्राप्त करके ऊन उद्योग को विकसित किया जा सके।

विघटन और प्रभाव

- **जीवन–शैली में परिवर्तन**
- **विघटन– पलायन और जनसंख्या परिवर्तन**
- **प्रभाव**–1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद तिब्बत के लिए व्यापार बन्द हो जाने के कारण भोटिया जनजाति की जीवन–शैली में विकराल परिवर्तन हुआ। सीमान्त क्षेत्र से बहुत तेजी से जनसंख्या का पलायन होने के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पुनः खतरा उत्पन्न हो गया है। चीनी आक्रमण के बाद तिब्बत से व्यापार बन्द होने से यहां के निवासियों के पुश्तैनी व्यापार पर तो असर पड़ा ही है, साथ ही स्थायी बसावट की प्रवृत्ति में भी वृद्वि हुई।
- **विघटन– ऊन एवं नमक का आयात का रूकना**
- **प्रभाव**–युद्ध से पहले तिब्बत से ऊन और नमक लाया जाता था लेकिन युद्ध के बाद उत्तराखण्ड के लोगों को सस्ते एवं सुलभ ऊनी वस्त्रों से भी वंचित होना पड़ा है। पर्वतीय समाज के द्वारा प्रयोग किया जाने वाला चट्टानी नमक की आपूर्ति भी बन्द हो गयी है **युद्ध** के बाद तिब्बत के लिए व्यापार बन्द हो जाने के कारण सीमान्त क्षेत्र से बहुत तेजी से जनसंख्या का पलायन हो गया है। साथ ही भोटिया समाज आर्थिक संकट, बेरोजगारी की स्थिति में पहुंच गया।
- **विघटन– पशुधन व्यापार का समापन**
- **प्रभाव**– तिब्बत से व्यापार बन्द होने के कारण भोटियों की लाखों बकरियां उन पर बोझ सी बन चुकी है। इसलिए अब उनकी बकरियों की संख्या लाखों में से घटकर मात्र हजारों में रह गयी है। इसका सीधा असर उत्तराखण्ड के ऊनी उत्पादन पर भी पड़ा है। मांग और पूर्ति में ज्यादा अन्तर हो जाने के कारण ठण्डे पहाड़ों के लिए अति आवश्यक ऊनी कपड़े अब आम आदमी की पहुंच से बाहर हो गए है। अब इन कपड़ों की जगह सिन्थैटिक धागों से बने वस्त्रों ने ले ली है।
- **विघटन–परम्परागत कला एवं हस्तशिल्प उद्योग का ह्रास**
- **प्रभाव**–इनके द्वारा हस्तशिल्प के रूप में बनाए जाने वाले गलीचे, दन, थुल्मे, कम्बल, ऊनी वस्त्र आदि की परम्परागत कला का अस्तित्व भी समाप्त हो रहा है। साथ ही वन्य जीव संरक्षण के तहत सरकार ने फूलों की घाटी और नन्दा देवी बायोस्फीयर जैसे कई बुग्याल क्षेत्र भी आरक्षित कर दिये है जिसके चलते चारागाहों से वंचित पशुपालकों का बकरी पालन भी प्रभावित हो गया है। अतः जिसका सीधा असर हस्तशिल्प उद्योग, एवं प्राचीनतम कुटीर उद्योग पर पड़ा है। यहां के लोग स्थानीय उत्पादों से शराब बनाने में भी माहिर माने जाते है। शराब इनके जीवन से जुड़ी हुई है।
- **विघटन–पारम्परिक और सामाजिक संरचना**
- **प्रभाव**–युद्ध के बाद भोटिया जनजाति आज भी आर्थिक रूप से पिछड़ी है और उनकी पारंम्परिक पहचान और सामाजिक संरचना पर गहरा असर पड़ा है। भोटिया समाज में इस विघटन के प्रभाव कई स्तरों पर दिखाई देते हैं पारंम्परिक पशुपालन, ऊनी वस्त्र निर्माण, जड़ी–बूटी संग्रह जैसे आजीविका स्रोत्र कम हो गए है। साथ ही सांस्कृतिक उत्सव, रीति रिवाज और बोली–बानी भी धीरे–धीरे कमजोर हो रही है। शिक्षा के प्रसार और युवा पीढ़ी के पलायन के कारण के कारण सांस्कृतिक निरंतरता में विघटन आया है। अब ये लोग मैदानों में जाकर रहने लगे और शिक्षा, रोजगार तथा स्वास्थ्य जैसी आवश्यकताओं की ओर अब उनका झुकाव होने लगा। सांस्कृतिक प्रभाव के क्षेत्र में भाषा, वेश–भूषा, संगीत, नृत्य और धार्मिक परम्पराओं पर आधुनिक संस्कृति का प्रभाव पड़ा। कई पारम्परिक रीति–रिवाज विलुप्त होने लगे।
- **विघटन–राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विघटन**
- **प्रभाव**–सीमांत सुरक्षा की दृष्टि से सेना की उपस्थिति और प्रशासनिक नियंत्रण ने स्थानीय जीवन पर असर डाला। युद्ध के बाद भारत सरकार द्वारा भोटिया जनजाति को अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्रदान तो किया गया लेकिन उनके पारम्परिक ज्ञान, लोककला, पोशाक, भाषा और सांस्कृतिक पहचान पर वर्तमान समाज का प्रभाव पडना शुरू हो गया जिससे उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता धीरे–धीरे समाप्त होने लगी।

पुनर्निर्माण की प्रक्रिया

अब भोटिया समुदाय ने बदलते सामाजिक–आर्थिक परिवेश में स्वयं को दुबारा स्थापित करने का प्रयास किया। पर्यटन, हस्तशिल्प, ऊनी वस्त्र उद्योग, जड़ी–बूटी और सरकारी योजनाओं ने उन्हें नए आर्थिक अवसर प्रदान किए। शिक्षा और आधुनिकता के प्रभाव से नई पीढ़ी ने अपनी पहचान को दुबारा से परिभाषित किया। भोटिया उत्सव, लोकनृत्य, पारम्परिक वेशभूषा और लोककला के संरक्षण के लिए विभिन्न सांस्कृतिक समितियां बनी है। आज भोटिया समाज अपने पारम्परिक मूल्यों और आधुनिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है।

1967 में इस जनजाति को आरक्षण मिलने के बाद भोटान्तिकों में सदियों से विकसित आबादी का बड़ा हिस्सा अब राजकीय नौकरियों में आना शुरू हो गया है। जिससे भोटान्तिकों में सदियों से विकसित विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक आर्थिक परिदृश्य एकदम बदल गया है। सीमान्त गांव सूने होते जा रहे है, ये लोग अब नीचे घाटियों में ही स्थायी रूप से रहने लगे है। इन्हीं में उत्तरकाशी के गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान के अन्तर्गत आने वाले दो गांव **जादुंग व नेलंग** समुद्रतल से 11,400 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहां भोटिया जनजाति के रोंगपा लोग निवास करते थे। 1962 के तिब्बत और भारत युद्ध के बाद इन लोगो को सुरक्षा की दृष्टि से बागोरी, डुण्डा गांवों में स्थानान्तरित किया गया था और इनके गांवों के घरो में भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल ने अपनी चौकिया बना ली थी। लगभग 60 जाड और भोटिया जनजाति के परिवारों को सरकार, सेना के उच्चाधिकारियों और जिला प्रशासन से अपने पैतृक गांव जाने की अनुमति मांगी है जिन्हें सरकार ने अपने पैतृक गांव छोड़ने को कहा था। ये दोनों ही गांव इस युद्ध के गवाह है और61 सालों से दोनों गांव वीरान है। उत्तराखण्ड सरकार इन गांवों को जल्दी ही बसाना चाहती है। सरकार इन गांवों को मॉडल गांव की तरह विकसित करने की सोच रही है और वाइब्रेट विपेज योजना के तहत इन्हें विकसित किया जा रहा है।

युद्ध के बाद भारत सरकार द्वारा भोटिया जनजाति सहित 5 जनजातियों को अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्रदान किया गया और कुछ क्षेत्रों मे पुनर्वास, शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक विकास के लिए योजनाएं शुरू की गई। हालांकि इन योजनाओं का उद्देश्य जनजातीय जीवन में समावेशी विकास लाना था फिर भी जमीनी स्तर पर इनका प्रभाव असमान और अपूर्ण रहा। भोटिया जनजाति आज भी आर्थिक रूप से पिछड़ी है। और उनकी पांरम्परिक पहचान और सामाजिक संरचना पर भी संकट बना हुआ है।

इसके साथ ही एक नई सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया भी आरंभ हुई है। भोटिया समुदायों ने हस्तशिल्प, ऊनीवस्त्र, जड़ी–बूटी उत्पादों और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में अवसर तलाशें है। कई स्थानों पर सांस्कृतिक महोत्सवों, मेलों और पांरम्परिक शिल्प की प्रदर्शनियों के माध्यम से अपने सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का प्रयास किया जा रहा है। राज्य सरकार और स्वयंसेवी संस्थाएं भी इन प्रयासों में सहयोग दे रही है, किन्तु पुनर्निर्माण की यह प्रक्रिया एक लंबा और चुनौतीपूर्ण कार्य है।

निष्कर्ष–भविष्य में यदि भोटिया जनजाति की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक गतिशीलता और आर्थिक सशक्तिकरण को सुरक्षित रखना है, तो आवश्यक है कि नीतिगत स्तर पर एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया जाए। सीमावर्ती जनजातियों के लिए विशेष सांस्कृतिक संरक्षण योजनाएं, पारम्परिक ज्ञान को मान्यता, जनजाति भाषा और लोककला का संरक्षण और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित किए जाए। इसके अतिरिक्त भोटिया युवाओं को नेतृत्व नवचार और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में सक्रिय रूप से शामिल करने की आवश्यकता है। अतः यह शोध भोटिया जनजाति की ऐतिहासिक घटना और उसकी सामाजिक परिणीतियों को समझने में सहायक होगा जैसे– कि कैसे एक युद्ध ने एक समृद्ध, गतिशील और आत्मनिर्भर जनजातीय समाज को गहरे विघटन की ओर धकेला और कैसे वह समाज आज पुनर्निर्माण की प्रक्रिया से गुजर रहा है।

संदर्भ सूची

1. डॉ0 पांगती, एस.एस.: मध्य हिमालय की भोटिया जनजाति
2. पाण्डेय, बद्रीदत्तः कुमाऊँ का इतिहासः पिघलता हिमालय (पलायन की मार झेल रहे है सीमान्त गांव) जुलाई 2021
3. बिष्ट, भारतीः ब्रिटिश कुमाऊँ एवं तिब्बत व्यापार (1857–1947 ई0) जर्नल–2022
4. डॉ0 पालीवाल, राजेश चन्द्रः डॉ0 पालीवाल दीपक :उत्तराखण्ड विभिन्न आयाम में भोटिया
5. प्रो0 शर्मा डी0डी0 : उत्तराखण्ड का लोकजीवन एवं लोकसंस्कृतिः 2012ः पृ0सं0–68–69
6. रावत जयसिंहः उत्तराखण्डः जनजातियों का इतिहास 2015 पृ0सं0–152–55
7. डॉ0 एस परिहार एवं दीपकः शोध पत्र दृष्टिकोण– भोटिया जनजाति का ऋतु प्रवास तहसील मुन्स्यारी के संदर्भ में दिसम्बर 2020
8. रिसर्च गेट–डॉ0 सिंह हरिओम प्रकाश, सिंह राणा सुरेन्द्र : भोटिया जनजाति का सामाजिक, आर्थिक विश्लेषण 2017
9. भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान पत्रिका– अन्तर्राष्ट्रीय
10. चौहान अंजलि, रिसर्च पेपरः इथेनो–मेडिसन ऑफ भोटिया ट्राइब इन माना विलेज ऑफ भारती भटट्, रिसर्च पेपरः ब्रिटिश कुमाऊँ एवं तिब्बत व्यापार (1957–1947)
11. शेरिंग चार्ल्स :वेस्टर्न तिब्बत एडं ब्रिटिश बॉर्डरलैंड में

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.